लाला लजपतराय : व्यक्तित्व एवं विचार

प्रा.डॉ. राजेंद्र रासकर, इतिहास विभाग प्रमुख, रयत शिक्षण संस्थेचे, डॉ. बाबासाहेब महाविद्यालय, ८५, शिंदे सरकार वाडा, वार्ड नं ८,औंध, पुणे 67 (ता.हवेली जि. पुणे. पिन कोड ४११०६७) ,
ई मेल - yogeshgangurde9579@gmail.com

सार

भारतभूमि हमेशा से ही वीरों की जननी रही है. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई वीर हुए जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में अपनी जान की भी परवाह नहीं की. ऐसे ही एक वीर थे शेर–ए–पंजाब लाला लाजपत राय. लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वह महान सेनानी थे जिन्होंने देश सेवा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी और अपने जीवन का एक–एक कतरा देश के नाम कर दिया

प्रस्तावना

लाला लजपत राय का व्यक्तित्व, देशभक्ती, राजनीति,धर्म, शिक्षा, संस्कृती, समाज सुधार आधी विभिन्न महनीय गुणो से मंडीत व्यक्तित्व रहा है। वह वास्तविक अर्थ मे एक महामानव तथा महान राष्ट्र निर्माता थे। देश को दासता आता से मुक्ती दिला ना ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश था। राजनीतिक दासता से भी तथा वैचारिक, सांस्कृतिक आदि दास्ता वो से भी। अपने इस उद्देश्य के पक्ष मे उन्होने कभी भी किसी प्रकार की आलोचना ओ की चींता नही की। उद्देश पथ पर आगे बढते जावो और इसके लिये आलोचना ओ की परवाह मत करो, यही उनकी कार्यप्रणाली थी। संक्षेप मे उनके व्यक्तित्व की आधोलिखित विशेषता थी।

मर्तीमान देशभक्त

लालाजी जीवनपर्यंत एक निष्ठावान देशभक्त बने रहे। उनके जीवन के अशेष कार्यकलाप जन्मभूमी के प्रति ती समर्पित रहे। अपनी प्रबल देशभक्ती के कारण ही उन्हे जीवन मे अनेक बार शासन तंत्र का कोपभाजन बनना पडा। मांडले का देश निकाला, कई बार बंदी बनाया जाना तथा दीर्घकालीन प्रवास इसी भावना के परिणाम थे। वह चाहे भारत मे रहे अथवा विदेशो में, सर्वत्र मातृभूमी का हित साधन करते रहे। उनका राजनीति मे अवतरण, विभिन्न प्रकार के सामाजिक अथवा धार्मिक आदि कार्य सब इसी भावना के परिणाम थे। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ती के लिए उन्हे बार–बार अपना पक्ष परिवर्तन भी करना पडा था। अपने जीवन की संध्या वेला की समीपता तथा मातृभूमी की दासता को देखते हुए उन्होने मद्रास मे एक बार कहा था, " अब जब जीवन की संध्या होते देखता हु और सिंहांवलोकन करता हु, तब खेद होता है की जिस माता की कोख से जन्मा, जिसकी गोद को मलमूत्र से अपवित्र किया, जिसका स्तन पिया, वह माता बंधन मे ही हे और मेरे जीवन के सूर्य अस्ताचल की और प्रयान तीव्र गति से हो चला है माता के बंधन तोडणे के लिये मैने कुछ नही किया इतकी तीव्र वेदना मुझे व्यतीत करती रहती है।"

वस्तुतः किसी की देशभक्ती का इससे बढकर और बडा प्रमाण क्या हो सकता है की उसे अपने जीवन के अंत से अधिक अपने मातृभूमि की स्वतंत्रता की चिंता हो। निरंतर स्वास्थ्य की दुर्बलता के कारण भी वह मातृभूमी के स्वतंत्रता समर मे डटे रहे और ईसी के लिये उन्होने अपना बलिदान भी दिया, उनकी दृष्टी मे मातृभूमी का स्थान स्वर्ग से भी बडकर था, आज देश मे ऐसे ही राष्ट्रीय भावना की आवश्यकता हे, तभी भारत की एकता और अखंडता सुरक्षित रह सकती है।[१]

अदभुत राजनीतिज्ञ एव बुद्धिजीवी

लालाजी केवल एक राजनीतिज्ञ ही नही, अपितु एक एक बुद्धिजीवी भी थे। यद्यपि उनके पास विश्वविद्यालय की कोई उपाधि नही थी, तथापि उनका ज्ञान भंडार अगाध था। उनका साहित्यसृजन, पत्रकारिता आदि उनके बुद्धिजीवी रूप का प्रतिनिधित्व करते है. अपने अमेरिका प्रवास की अवधी मे वह वहा की सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्या का अध्ययन भी करते रहे तथा वहा उन्होने अध्यापन कार्य भी किया था. राजनीति मे रहकर उन्होंने देश की राजनीति को एक नवीन दिशा दिखाई, साथ ही साथ वह सदा एक ज्ञानपिपासू बुद्धिजीवी के रूप मे भी जनता के समक्ष बने रहे. इस विषय में उनके संपर्क मे रहे श्री अलगुराय शास्त्री ने लिखा है – लालाजी बहुत अच्छे लेखक हे इसके लिए उनकी 'अनहॅप्पी इंडिया', 'इंग्लंड डेट टू इंडिया', आदि पुस्तके लालाजी कृत उपस्थित हे. अंतरराष्ट्रीय राजनीति के वह निपून ज्ञाता थे बार– बार विदेशो की यात्रा से उन्होने भारत का जो सामंजस्यपूर्ण स्थान की राजनीति मे था, और हे उसे गवेशनापूर्ण ढंग से कहा है और लिखा है।"

Copyright @ 2022 Authors

सत्य तो यह हे की लालाजी नैसर्गिक रूप मे एक बुद्धिजीवी थे। उनका राजनीति मे अवतरण पण तत्कालीन परिस्थितियों का परिणाम था। इन दोनो गुणो का साथ साथ साहचर्य विरल रूप मे ही दिखा जाता है।[२]

यथार्थर्ववादी राजनीतिज्ञ

लाला लजपतराय एक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ थे। अवसरवादीता एव सत्तामोह के कारण यथार्थ की बली दे देने वाले कोरे आदर्शवादी राजनेताओं के लिए लाला जी का राजनीतिक जीवन एक आदर्श प्रेरणा देता है। वहा सत्य को डंके की चोट पर स्वीकार करते थे। वह एक और निष्ठावान काँग्रेस थे, वही दूसरी ओर हिंदू समाज का उन्नयन भी उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग था। सत्तामोह के कारण यथार्थ की उपेक्षा करनेवाले राजनेता बहुदा उनपर सांप्रदायिक होने का आरोप लगाते थे। ऐसे आरोपो के प्रत्युत्तर मे वह वह प्रायः कहा करते थे – ''यदि स्वराज्य के लिये हमारी आतूरता हमे धर्म बदलने की प्रेरणा दे और हम इसाई बन जाये, तो एक प्रकार की स्वतंत्रता अंग्रेज हमे दे देंगे, परंतु स्वराज्य तो सच्चे अर्थ मे तभी होगा, जब हम अपने स्वरूप मे स्थिर रहकर राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करे। हमारा स्वरूप हे, हमारा धर्म, हमारी संस्कृ ति और हमारी अपनी देशगत, जातिगत भावनाऐ। उन्हे त्यागकर मिलने वाला स्वराज्य, स्वराज्य नही है।"

आज देश मे बार– बार यह आवाज उठती है कि सरकार देश की बहुसंख्य जनता की उपेक्षा कर रही है। लालाजी का स्पष्ट मत की बहुसंख्य की उपेक्षा करनेवाली सरकार प्रजातंत्र की शत्रू हे – " यदि किसी देश का बहुसंख्याक समाज दलित हो जाये, तो वह देश की दलित हो जायेगा। प्रजातंत्र की यह सिधी मांग हे की की किसी देश या क्षेत्र का बहुसंख्यक समाज उठाकर चलने की स्वतंत्रता रखे। अल्पसंख्यांको की सहायता से विदेशी शासन इस देश के बहुसंख्यको को दबाकर अपना प्रभुत्व रखना चाहता है। यही इस देश के लिए भारी अभिशाप है। जो कोई भी इस नीती का समर्थक या पोषक हे, वह प्रजातंत्र का शत्रू हे।"

आज के वैचारिक क्लिब सत्तालोलूप किसी भी राजनेता मे इतना साहस नही, है जो लालाजी के इस आदर्श को दुहरा ना सके। इसमे कोई संदेह नही की वह बहुसंख्यक समाज को उसके उचित अधिकार दिलाना चाहते थे, किंतु इसका यह अर्थ नही कि वह, संख्यांको के विरोधी थे। वह राष्ट्र की एकता एव अखंडता के लिए सभी संप्रदायो मे परस्पर सौहार्द के प्रबल समर्थक हे। हिंदू महासभा से संबंध होने पर भी उन्होने सदा सांप्रदायिक आधार पर चुनाव का विरोध किया। का स्पष्ट उद्घोष था की जी चाहे हमारे धर्म अथवा संप्रदाय भिन्न क्यो न हो, हम सभी इस देश के निवासी है। भारत का कोई भी संकट हमारा सबका संकट है।[३]

लाला लजपतराय – राष्ट्रीय काँग्रेस

कांग्रेस के सदस्य होने पर भी लालाजी ने अनेक बार कांग्रेस के कार्यक्रम का विरोध किया। सत्य के लिए डटे रहना तो उनके चरित्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता थी। सत्ताधारीयोद्वारा अल्पसंख्यांको के प्रति तुष्टीकरण की नीति के वह सर्वथा विरुद्ध थे। वह राष्ट्र के सभी नागरिको के लिये समान अधिकारो के समर्थक थे। इस प्रकार की तुष्टीकरण की नीति को वह राष्ट्र तथा अल्पसंख्यक, दोनो के लिए घातक समझते थे। वह किसी भी वर्ग को विशेष अधिकार देने के पक्ष मे कदापि नही थे। उनका स्पष्ट अभिमत था कि मुसलमानो के साथ भाई के समान व्यवहार होना चाहिए, किंतु राजनीतिक सत्ता के लिये हे उन्हे विशेष अधिकार देणे की बाते करना, उन्हे भडकाने के समान है। ऐसा करणा राष्ट्र के अस्तित्व के लिए घातक हे। वह प्रायः कहा करते थे की ' आवश्यक चाटूकारिता उसी प्रकार मुसलमानो को बिगाडती हे, जैसे अनावश्यक लाड– प्यार लडको या बच्चो को।'[४]

राष्ट्रीय भावना और एकता

सांप्रदायिक सद्भाव के लिए वह सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना का विकास आवश्यक समझते थे। थोथे नारो अथवा भाऊकता पूर्ण वातावरण बनाकर उत्पन्न की गई एकता उन्हे अभिप्रेत नही थी। ऐसी एकता को वह एक क्षणिक अवेश अस्थाई भावमात्र समझते थे। वह संस्कृती प्रेम तथा राष्ट्रीय चेतना को परस्पर एक दुसरे को समानार्थक समझते थे। अन्तः हा देश की संस्कृ ति के प्रति ती उपेक्षा एव उदासीनता को वह राष्ट्रीय चेतना के लिए घातक समझते थे। इसीलिए काँग्रेस से संबंध होते हुए भी देश के अनेक धार्मिक एव सांस्कृतिक संगठनो से उनका संपर्क निरंतर बना रहा।[५]

दलीतो के मसीहा समाज में व्याप्त कुरितीयो को दूर के बिना उसके उत्थान की कल्पना करना दिवास्वप्न के समान है। इसी सत्य को स्वीकार करके लालाजी ने सर्वप्रथम हिंदू समाज के कोढ अस्पृश्यता के उन्मुलन का संकल्प किया। इस इस अमानवीय भावना ने हिंदू समाज को सदा ही कलंकित किया है। इसी भावना ने हिंदू समाज को सदा विखंडन के लिए भीम प्रेरित किया है और यही विखंडन अंततः राष्ट्रीय एकता केली अभिशाप स्वरूप सिद्ध हुआ है।

Copyright @ 2022 Authors

कोकनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद अली ने अच्युत तो को कथा हिंदू तथा मुसलमानो के बीच बाटने का घातक प्रस्ताव रखा। भला लालाजी जैसे सच्चे भारतीय को यह प्रस्ताव कैसे सहाय्य हो सकता था। सन १९२४ मे उन्होने इस समस्या के समाधान के लिये हे अच्युततो द्वार कमेटी की स्थापना की और समस्त भारत मे अच्युत ओके उद्धार का रचनात्मक कार्य प्रारंभ किया। विशेष ध्यान देने योग्य तथ्य यह थे की महात्मा गांधी ने लाला जी के इस कार्य के दस वर्ष बाद १९३४ मे हरिजन सेवक संघ की स्थापना की तथा इस कार्य को आगे बढाया। वस्तुतः हिंदू समाज के लिए यह लालाजी का एक महान योगदान था।

इस कार्यक्रम के माध्यम से लालाजी ने हिंदू समाज के चिरकाल से उपेक्षित एक वर्ग को जीवन का एक नवीन पथ दिखाया। उसेस सन्मान स्वावलंबन तथा स्वाभिमान के सात जीना सिखाया। दुर्भिक्ष आदि दैवीय आपदाओ में लालाजी ने पिडीतो की सहायता के लिए हे चिरस्मरणीय कार्य किये। उन्होने अनेको दिनो एव दुखियो को विधर्मी होने से बचाया। उनके लिये अनाथालय बनाये हे उन्हे स्वावलंबन की शिक्षा दि। वास्तव मे लाची दलीतो के सच्चे मसीहा थे। उनके इस गुण की प्रशंसा में महात्मा गांधी ने कहा था– ''वे दलीतो के मित्र बने जहा कही दुखी दरिद्र हो वही वह, दौडते थे।"

लाला लजपतराय १८८८ मे कॉंग्रेस मे आ गये थे। तब से वह सदा राजनीतिक रंगमंच पर छाये रहे। इस समय काल मे ऊन मे बहुबिध प्रेरणा व एवम भूमिका ओके दर्शन होते है। उनकी इन समस्त भूमिका मे उनकी देशभक्ती की भूमिका का सर्वपरी है। व ह केवल एक राजनेता ही नही समाज सुधारक जनसेवक प्रकृष्ट बुद्धिजीवी तथा निर्भीक वक्ता भी थे। उनके इंही गुणों से प्रभावित हो कर महात्मा गांधी ने कहा था – ''लजपत राय तो एक संस्था थे। अपनी जवानी के समय से ही उन्होने देशभक्ती को अपना धर्म बना लिया था और उनके देश प्रेम मे संकीर्ण संकीर्णता न थी। वह अपने देश के इसलिये प्रेम करते थे कि वह संसार से प्रेम करते थे। उनकी राष्ट्रीयता आंतरराष्ट्रीय ता से भरपूर थी। उनकी सेवा विविध थी। वे बडे ही उत्साही समाजावर धर्मसुधारक हे। ऐसे एक भी सार्वजनिक आंदोलन का नाम लेना असंभव है इथे सेवा करने की उनकी भूक सदा अतृप्त थी।" बहुमत के निर्णय का वह सदा सन्मान करते थे भले ही सिद्धांत वह उससे असहमत ही क्यों न हो। इस प्रकार के निर्णय को उन्होने कभी अपने प्रतिष्ठा का प्रश्न नही बनाया। उनके इस गुनो के कारण मौलाना मोहम्मद अली उन्हे 'क्विक चेंज आर्टिस्ट' त्वरित परिवर्तनशील कलाकार कहते है।

उनके राजनीतिक कौशल, जनसेवा की भावना, सर्जनशीलता आदि गुणो से उन्हे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मे एक अनुपम स्थान प्रदान किया है। निसंदेह वह भारत राष्ट्र के निर्माताव मे अग्रणी थी।[६]

कष्ट निवारण

पश्चिमी सुबा सरहद कोहाट शहर मे हिंदू– मुसलमानो का दंगा हो गया। लूट–मार से त्रस्त होकर कई हजार हिंदुओ को घरबार छोड कर भागना पडा। पीडितो की तात्कालिक सहायता के लिए लाजपतराय ने कोहाट फंड खोल कर सेकडो दुःखी परिवारो को फिर से बसाया।

दुरवर्ती उडोसा मे भीषण श्रकाल के समाचार एन्डयुज साहब जे लखो द्वारा लाजपत राय को मिले पिडीतो की सहायता के लिए उन्होने फंड खोला और सेवाकार्य के लिए लोक सेवक मंडल के सदस्य मोहनलाल को उडीसा भेजा।

लाजपत राय संघटित रुप से सेवाकार्य करने की दृष्टी से तेवा–समिती की स्थापना करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने दौड–धूप करनी भी प्रारंभ कर दी थी। परंतु मानव की सब कामनाए पूरी नही होती।[७]

निष्कर्ष

भारतभूमि हमेशा से ही विरो की जननी रही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे ऐसे कही वीर हुए जिन्होंने देश को आजादी दीलाने मे अपनी जान की भी परवा हो नही की. ऐसे ही एक वीर थे शेर–ए–पंजाब लाला लजपत राय। लाला लजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वह महान सेनानी थे जिन्होंने देश सेवा के लिए अपने प्राणो की आहुती दे दी। और अपने जीवन का एक एक कतरा देश के नाम कर दिया। ३० ऑक्टोबर १९२८ को लाला लजपतराय ने लाहोर मे सायमन कमिशन के विरुद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन मे हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुये लाठीचार्ज मे ये बुरी तरह से घायल हो गये। उस समय इनोने कहा थाः ''मेरे शरीर पर पडी एक एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत मे एक–एक किल का काम करेगी।" और वही हुआ भी; लाला जी के बलिदान के २० साल के भितर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। १७ नवंबर १९२८ को इन्ही चोटो की वजह से इनका देहांत हो गया।

लाला जी की मृत्यु से सारा देश उत्तेजित हो उठा और चंद्रशेखर आझाद, भगत सिंग, राजगुरू, सुखदेव व अन्य क्रांतिकारीयोने लाला जी पर जानलेवा लाठीचार्ज का बदला लेने का निर्णय किया। इस देश भक्तो ने अपने प्रिय नेता की हत्या के ठीक एक महीने बाद अपनी प्रतिज्ञा पुरी कर लि और १७ डिसेंबर १९२८ को ब्रिटिश पोलीस के अफसर सॉंडर्स

Copyright @ 2022 Authors

को गोली से उडा दिया। लालाजी की मौत के बदले साँडर्स की हत्या के मामले मे ही राजगुरू, सुखदेव, और भगत सिंह को फाशी की सजा सुनाई गई।

संदर्भ सूची

•डॉ. राणा भगवान सिंह ''भारत के महान अमर क्रांतिकारी लाला लजपतराय'' भारतीय ग्रंथ निकेतन नई दिल्ली पृष्ठ–१५०

•श्री. मोहनलाल ''लाला लजपतरायः जीवन और कार्य'' होरिआरपूर विश्वेश्वराननन्द वैदिक शोध संस्थान १९६५ पृष्ठ क्र. १३२.१३३

•ठीप.ैृ.ट.ैजतनहहसम वित प्दकमचमदकमदबम स्ंसं स्ंरचंजतंल'' ।उवस च्नइसपबंजपवद छमू क्मसीप 1989 पृष्ठ क्र. 79–80

•सुशील कुमार ''पंजाब केसरी लाला लजपतराय'' आर्य बुक डेपो करोल बाग नई दिल्ली १९७७ पृष्ठ क्र. ४३.४४

•स्ंसं कींचंज त्ंप स्पमि ेजवतल व ि स्ंसं संरचंजतंल'' डमजतवचवसपजंद ठववा ब्व– च्टज्.स्ज्क. क्मसीप 1976ए च्ंहम छव. 105

•उपरोक्त राणा भगवाण सिंह पृष्ठ– १५४.१५५

•उपरोक्त मोहनलाल पृष्ठ क्र. १३६

Copyright @ 2022 Authors